दूसरी नज़र

■ पी चिदंबरम

आखिर खत्म हुआ चुनाव प्रचार

चुनावों की अधिसूचना जारी होने के बाद से आज मतदान के आखिरी दिन तक दस हफ्ते का वक्त काफी लंबा, थका देने वाला और कई बार हताश कर देने वाला रहा। नीतियों पर बहस के अलावा जो कुछ हमने देखा उसमें कहीं कोई कमी नहीं छोड़ी गई। राजनीतिक दलों, उम्मीदवारों, रैलियों और रोड शो, पैसे के खर्च, दी गई गालियां, हिंसा, चर्चित ईवीएम और वीवीपैट की गड़बड़ियों और चुनाव आयोग द्वारा इन्हें क्लीन चिट दिए जाने का काम खुल कर हुआ। आखिरकार एक बड़ा लोकतांत्रिक कार्य संपन्न हो गया है।

रिपोर्ट कार्ड पर चुनाव आयोग को सिर्फ 'औसत' मिला है। मेरी चिंता इस बात पर रही कि चुनाव आयोग ने अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग मापदंड अपनाए। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में रोड शो, कारों के काफिले और होर्डिंग लगाने की इजाजत नहीं थी, शहरों और कस्बों में पोस्टर लगाने और दीवारों पर लिखने पर पाबंदी थी, खर्च पर निगरानी रखने रखने वाले पर्यवेक्षक दखलंदाजी और मनमानी कर रहे थे और 'काल्पनिक खर्चों' की अवधारणा को विचित्र सीमा तक ले जाया गया। दूसरी ओर, दिल्ली और भारत के उत्तर, पश्चिम और पूर्व के चुनाव क्षेत्र होर्डिंग और पोस्टर से अटे पड़े थे। लंबे-लंबे रोड शो और काफिले निकाले गए। दिमाग ठिठका देने वाला खर्च साफ दिख रहा था, कहीं कोई चुनाव पर्यवेक्षक नहीं थे। मुझे आश्चर्य है कि कैसे चुनाव आयोग खुल कर इस तरह के भेदभाव भरे कानूनों को लागू करता और उन्हें उचित ठहराता रहा।

मीडिया- कौन सा?

प्रिंट और टीवी मीडिया ने पक्षपात किया। ज्यादातर सरकार के पक्ष में या तो लगाव के कारण थे या फिर खौफ की वजह से। ज्यादातर तो खौफ की वजह से रहे। कुछ भाजपा के साथ-साथ चलने वाले बन गए। कोई भी ऐसा नहीं दिखा, जिसे याद रहा हो कि लोकसभा चुनाव शून्य सरकार के पांच साल के कामकाज का लेखाजोखा है। कुछ अखबारों और चैनलों ने भाजपा सरकार के कामकाज की आलोचना करने और उसे उजागर करने की हिम्मत दिखाई। ऑनलाइन मीडिया और सोशल मीडिया धन्यवाद के पात्र हैं, जिनकी बदौलत देश में जीवंत बहस चलती रही। देश में गुंजायमान बहस का ही यह असर है, जिसे व्यापक रूप से 'अंडरकरंट' कहा जा रहा है और इसी से चुनाव के नतीजों का फैसला होगा।

आर्थिकी नदारद

भाजपा ने चुनाव प्रचार के शुरू में रास्ता बदल लिया था। अच्छे दिन का कभी जिक्र नहीं किया गया। 2014 के वादों ने भाजपा को मुश्किलों में डाल दिया। नरेंद्र मोदी ने 'सर्जिकल स्ट्राइक', पुलवामा-बालाकोट और राष्ट्रवाद में शरण ले ली। 'सर्जिकल स्ट्राइक' सिर्फ दूसरी सीमापार कार्रवाई थी, जिससे पाकिस्तान को फर्क नहीं पड़ा। पुलवामा व्यापक खुफिया नाकामी का नतीजा था। बालाकोट के रहस्य पर तो परदा ही पड़ गया है। मोदी के 'राष्ट्रवाद' के तर्क ने देश को दो हिस्सों में बांट डाला -'क्या आप मेरे साथ हैं या आप मेरे विरोध में हैं?' और अगर आप मोदी की नीतियों के खिलाफ थे तो आप राष्ट्र-विरोधी थे। और इस हिसाब से तो वे सभी जिन्होंने 2019 में मोदी के खिलाफ वोट डाला है, राष्ट्र-विरोधी होंगे और इस तरह हम राष्ट्र-विरोधियों की प्रमुखता वाला देश बन सकते हैं।

अर्थव्यवस्था को भुला दिया गया। जब पुख्ता रिपोर्टें और सरकारी आंकड़े सामने आए और इन्होंने सरकार की झूठी कहानी के गुब्बारे की हवा निकाल दी, तो हलचल मच गई। जब प्रधानमंत्री चुनाव प्रचार कर रहे थे और वित्तमंत्री ब्लॉग लिख रहे थे, अर्थव्यवस्था डूब रही थी (देखें- अर्थव्यवस्था खतरे में, जनसत्ता 12 मई 2019)। पिछले हफ्ते और बुरी खबर आई। फरवरी 2019 में विनिर्माण की दर ऋणात्मक हो गई। सेंसेक्स और निफ्टी में लगातार नौ दिन गिरावट बनी रही। डॉलर-रुपए की विनिमय दर 70.26 रुपए तक चली गई। अखबारों में छपी रिपोर्टों ने स्वच्छ भारत, उज्ज्वला और प्रधानमंत्री आयुष योजना के नतीजों को उजागर कर दिया। ईरान पर अमेरिका की पाबंदी के बाद तो भारत को तेल के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है और तेल के दाम भी चढ़ गए हैं। अमेरिका और चीन के बीच चल रहे व्यापार युद्ध से भी भारत के विदेशी कारोबार को खतरा पैदा हो गया है।

सार्वजनिक भाषण का स्तर तेजी से गिरा है। इस बात से जरा इनकार नहीं किया जा सकता कि पूरे चुनाव में अपशब्दों और विशेषणों की भरमार रही और यहां तक कि व्यंग्य, कटाक्ष और इशारे भी असंसदीय भाषा में किए गए! 'लोकतंत्र का तमाचा' को शाब्दिक अर्थों में लिया गया और इसे प्रधानमंत्री के लिए तमाचे की बात बना दी गई। महाभारत के एक पात्र की ओर संकेत करते हुए तो बाकायदा नाम भी लिया गया।

नरेंद्र मोदी ने हर उस ट्वीट पर नाराजगी जताई जो उनके लिए कहे गए और पीड़ित बने रहे और इसमें उन्होंने इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया कि उन्होंने पीड़ितों की लंबी कतार छोड़ रखी है।

मोदी के कई रूप

चुनाव प्रचार खत्म होते-होते बीच गर्मी में अचानक बारिश की तरह गैरइरादतन हास्य की फुहार भी देखने को मिली। इसके लिए हम प्रधानमंत्री के ऋणी हैं। विज्ञान तथा तकनीकी से अपने संबंध के बारे में उल्लेखनीय खुलासे करके उन्होंने अपने चुनाव अभियान के बीच माहौल हल्का कर दिया। पहला बालाकोट हमले को लेकर था। श्री मोदी ने कहा- 'विशेषज्ञ खराब मौसम की वजह से हमले के बारे में पुनर्विचार कर रहे थे, लेकिन तब मैंने उन्हें कहा, इतने ज्यादा बादल होना और बारिश होना फायदेमंद हो सकता है और हम उनके रडार से बच सकते हैं। यह मेरी कच्ची समझ थी। तब मैंने कहा- बादल छाए हुए हैं, जाइए आगे बढ़िए।'

श्री एलके आडवाणी के साथ अपने जुड़ाव को याद करते हुए मोदी ने कहा- 'करीब 1987-88 में मैंने पहली बार डिजिटल कैमरे का इस्तेमाल किया था... मैंने आडवाणी की फोटो खींची और उसे दिल्ली भेज दिया। आडवाणीजी आश्चर्य में पड़ गए थे और उन्होंने पूछा-' आज मेरा रंगीन फोटो कैसे छप गया?'

विज्ञान के साथ श्री मोदी का अतियथार्थवादी अनुभव ईश्वर का आशीर्वाद होना चाहिए। मुझे 2014 में मोदी की सुनाई एक और कहानी याद आ गई। 'ईश्वर ने मुझे रंगों को मिलाने की कला बख्शी है। चूंकि मैं ईश्वर की देन हूं, इसलिए मैं सब जगह उपयुक्त बैठता हूं।'

ईश्वर भारत के चुनावों को देख रहे हैं।

अज्ञानता का आत्मविश्वास

एक आदमी ने 1995 में अमेरिका में दो बैंक लूटे। दोनों जगह वह बिना चेहरा ढके गया और बैंक से पैसा लूटने के बाद मुस्कराता हुआ सिक्योरिटी कैमरा के सामने जाकर खड़ा हो गया। कैमरे के सामने वह बड़े आराम से काफी देर तक खड़ा रहा और उसको मुंह चिढ़ाता रहा। फिर वह भाग गया। पर रात होते तक पुलिस ने उसकी पहचान कर के उसको गिरफ्तार कर लिया।

लुटेरा अपनी गिरफ्तारी पर स्तब्ध था। उसको समझ नहीं आ रहा था कि उसकी पहचान कैसे हुई। पुलिस वालों ने उसको बताया कि भइया, हमें पहचान करने में कोई दिक्कत नहीं आई थी, क्योंकि तुम नकाब नहीं पहने थे और उसके ऊपर तुम खुद ही सिक्योरिटी कैमरा के सामने आकर अपना वीडियो बना गए थे। पर लुटेरे को उनकी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। वह हैरान था कि कैमरे ने उसकी तस्वीर ले कैसे ली, जबकि वह अपने चेहरे पर नीबू का रस लगा कर गया था। उसको विश्वास था कि नीबू का रस आदमी को अदृश्य कर देता है और पुलिस वाले जो कैमरे पर लिया गया वीडियो दिखा रहे हैं, वह फर्जी है।

तीरंदाज

■ अश्विनी भटनागर

> कोई व्यक्ति जितना अक्षम होगा उसका आत्मविश्वास उतना ही ज्यादा होगा। ज्ञान का भ्रम उसको अति-आत्मविश्वास देता है। दरअसल, ज्ञान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान नहीं, बल्कि ज्ञान का भ्रम है।

उसकी दलील थी कि नीबू का रस अदृश्य स्याही बनाने के लिए उपयोग किया जाता है और चूंकि उसके उपयोग से लिखा हुआ गायब हो जाता है, तो उसका चेहरा भी गायब हो गया था। इसलिए उसके मुताबिक उसके सामने जो वीडियो साक्ष्य प्रस्तुत किए जा रहे थे, वे सब नकली थे। पुलिस ने उसे बहुत समझाया, पर वह नहीं माना और अंत तक अपनी बात पर अड़ा रहा कि वास्तव में नीबू की वजह से वह अदृश्य था और पुलिस बकवास कर रही थी। वैसे यह बैंक चोर न तो पागल था और न ही उसने मादक पदार्थों का सेवन किया हुआ था। बस, उसे अपने ज्ञान पर इतना आत्मविश्वास था कि उसके आगे उसे सारे साक्ष्य बेतुके और झूठे लग रहे थे।

इस घटना से प्रेरित होकर कॉर्नेल यूनिवर्सिटी के दो विद्वानों- डेविड डनिंग और जस्टिन क्रुगर- ने एक शोध शुरू किया, जिसकी परिणति डनिंग-क्रुगर सिद्धांत के रूप में हुई। व्यंग्य शिरोमणि हरिशंकर परसाई ने उनके निष्कर्ष को पहले ही शब्द दे दिए थे। परसाई ने कहा था, आत्मविश्वास कई तरीके का होता है- धन का, सत्ता का या फिर ज्ञान का। पर सबसे प्रचंड आत्मविश्वास मूर्ख का होता है। बैंक चोर ने परसाई की हंसी को गंभीर रूप दे दिया था।

बैंक चोर की मूर्खता से प्रभावित होकर डनिंग और क्रुगर ने जो अध्ययन किया, उसमें पाया कि अमूमन जिन लोगों के पास कम जानकारी होती है और जिनमें जानकारी जमा करने की क्षमता भी कम होती है, वे उनके सीमित ज्ञान को लेकर बेहद आक्रामक होते हैं। क्षमता के आभाव में उनके पास साक्ष्य को अस्वीकार कर देने की प्रतिभा होती है और बहस किए जाते हैं कि जो वे कह रहे हैं वही सही है और स्वयं में साक्ष्य भी है। बैंक चोर की तरह वे भी नीबू का रस लगा कर गायब हो जाने वाली बात कर पूरे आत्मविश्वास से अड़े रहते हैं। आखिरकार, वे तर्क करते हैं कि जब नीबू से लिखावट गायब हो सकती है, तो आदमी क्यों नहीं?

चार्ल्स डार्विन ने अपनी किताब 'डिसेंट ऑफ मैन, 1871' में लिखा था कि कम जानकारी अक्सर लोगों में ज्यादा जानकारी का लालसा नहीं उत्पन्न करती, बल्कि उनमें आत्मविश्वास बढ़ाती है। वे अपने दोष को नहीं देख सकते हैं और इसलिए दोष को पूरे आत्मविश्वास के साथ गुण मनवाने के लिए भिड़ जाते हैं। ट्विटर और फेसबुक पर इस तरह की प्रवृत्ति के लाखों उदाहरण उपलब्ध हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि मूर्ख को नहीं मालूम होता कि वह मूर्ख है। दूसरे शब्दों में, उसको नहीं मालूम है कि उन्हें नहीं मालूम है। उसका घोर आत्मविश्वास नामालूमियत की भरपाई कर लेता है। नीबू के रस में विश्वास के चलते उनका अज्ञान उनके लिए अदृश्य है।

डोनाल्ड ट्रंप जब अमेरिका के राष्ट्रपति बने, तो डनिंग-क्रुगर सिद्धांत को राजनीति से जोड़ा गया था। ट्रंप का आत्मविश्वास चौंकाने वाला था। मंच पर खड़े होकर वे ऐसे-ऐसे दावे करते थे कि जानकार लोग उनकी बातों से परेशान हो जाते थे, जबकि आम लोग उनका जयकारा लगाने लगते थे। विशेषज्ञ हैरत में थे कि लोग ट्रंप के सफेद झूठों को भी सहर्ष स्वीकार रहे थे। अमेरिकी वोटर बेहद रोमांचित हुए थे, जब ट्रंप ने कहा था कि वे सफलताओं का इतना ढेर लगा देंगे कि लोग सफलता से भी बोर हो जाएंगे। ऐसा होना संभव नहीं था, पर फिर भी लोगों को विश्वास था कि ऐसा जरूर होगा। इसी तरह, वे पिछले तीन साल से बार-बार कह रहे हैं कि वे बेहद सफल राष्ट्रपति हैं, अमेरिका बेहद सफल देश है और अमेरिकी लोग बेहद सफल लोग हैं। ढपोरशंख ट्रंप अपने को बेहद बलवान बताते हैं, पूरे आत्मविश्वास के साथ, क्योंकि उन्हें नहीं मालूम कि उन्हें मालूम नहीं है कि असलियत क्या है।

उनकी ही तरह उनके समर्थक वास्तविक और पूर्ण जानकारी की कमी और उसको पाने की अपनी क्षमता को आक्रामक आत्मविश्वास से पूरा करते हैं। वे मानते हैं कि वे सही हैं, क्योंकि उनको विश्वास है कि तथ्यों की सत्यता से उनका कोई लेना-देना नहीं है। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति जितना अक्षम होगा उसका आत्मविश्वास उतना ही ज्यादा होगा। ज्ञान का भ्रम उसको अति-आत्मविश्वास देता है। दरअसल, ज्ञान का सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान नहीं, बल्कि ज्ञान का भ्रम है।

अमेरिका में बहुत सारे और भी ऐसे उदाहरण हैं, जो पूरे आत्मविश्वास से अपने बारे में बहुत कुछ ऐसा कहते हैं, जिसे सत्य से परे या सिर्फ डींग कहा जा सकता है। कुछ नेता अपने को अटूट राष्ट्रभक्त कहते हैं और कुछ खुद ही अपने को सर्वोत्तम बुद्धिमान या बलवान घोषित कर देते हैं। राष्ट्रभक्ति या बुद्धिमत्ता क्या होती है, उसके बारे में उनकी जानकारी नगण्य है और अपनी अक्षमता की वजह से वे यह नहीं जान सकते कि उनकी जानकारी कितनी सीमित है। फलस्वरूप, वे अति-आत्मविश्वास में खुद-ब-खुद घिर जाते हैं। ऐसी स्थिति में समाज में आत्मविश्वास से भरे आक्रामक तेवर वाले समूह का घेरा बन जाता है, जो अपनी सीमित जानकारी के आधार पर हर जानकारी को नकार कर अपने जयकारे में मदहोश हो जाता है। इस समूह के लिए सवाल पूछना या फिर उत्तर तलाशना अशिष्टता की निशानी है, क्योंकि उसके पास सब सवालों के जवाब पहले से ही मौजूद होते हैं। भ्रम ही उसके लिए ब्रह्म बन जाता है और ब्रह्म वाक्यों से बहस नहीं हो सकती है।

सियासत का खेल और खिलाड़ी

आज शाम तक समाप्त हो जाएगा मतदान, इस आम चुनाव के लिए। आज सारी शाम मेरे जैसे 'पंडित' बिताएंगे किसी न किसी टीवी स्टूडियो के चमकते उजाले में उन एग्जिट पोलों का विश्लेषण करते हुए, जो हर चरण के बाद किए गए थे, पर राज रखे गए हैं आज तक। जिन लोगों ने देखे हैं ये एग्जिट पोल चुपके से, बताते हैं कि अगली बार भी बनेगी मोदी सरकार। एग्जिट पोल हमेशा सही नहीं होते हैं, लेकिन इस बार शायद होंगे, क्योंकि इनको बिना देखे ही मैं कह सकती हूं कि जहां भी गई हूं पिछले दो महीनों में, मुझे मोदी के समर्थक ज्यादा मिले हैं, आलोचक कम। यह सिर्फ बालाकोट के कारण नहीं है, लेकिन देश की सुरक्षा एक अहम मुद्दा जरूर रहा है इस चुनाव में।

सबसे बड़ा मुद्दा लेकिन मोदी खुद बने रहे हैं पूरे चुनाव अभियान के दौरान। कुछ इस लिए कि आम मतदाताओं की नजर में उनकी छवि एक ईमानदार, नेक और मेहनती प्रधानमंत्री की है। कुछ इसलिए भी कि मोदी के मुख्य प्रतिद्वंद्वी ऐसे लोग थे, जिन्होंने मोदी को बदनाम करने के अलावा कुछ नहीं किया। ऐसा करके उन्होंने मोदी की मदद की और अपना नुकसान। खासकर चुनाव के आखिरी दिनों में, जब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने यहां तक कह डाला एक आमसभा में कि जब उनकी बारी आएगी, मोदी को जेल भेज दिया जाएगा या देश से भगा दिया जाएगा। यह धमकी जब उस महिला से आती है, जिसके दौर में पंचायतों के चुनाव भी शांति से नहीं हुए हैं, मोदी की मदद करती है नुकसान नहीं।

ममता दीदी अकेली नहीं थीं मोदी की मदद करने में। उनसे भी ज्यादा मोदी की मदद की है कांग्रेस अध्यक्ष ने। राहुल गांधी ने चुनाव अभियान के शुरू होने से पहले ही मोदी की छवि को कलंकित करने के लिए एक मुहिम शुरू कर दी थी रफाल सौदे को घोटाला बता कर। चौकीदार चोर है, चौकीदार चोर है चिल्लाते रहे, बिना कोई सबूत पेश किए कि मोदी ने चोरी कैसे की इस सौदे में। सो, आरोप टिका नहीं मतदाताओं के मन में। जो बात टिकी इस प्रयास से, सिर्फ यह कि देश के प्रधानमंत्री को चोर कहना गलत है। मुझे कई देहाती मतदाता मिले, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि राहुल गांधी को इस तरह की बातें करनी नहीं चाहिए। एक गांव के अध्यापक के शब्दों में, 'राहुल गांधी का लगता है मानसिक संतुलन हिल गया है। जो भी मन में आता है बोल देते हैं।'

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

> सत्रहवीं लोकसभा की कहानी का अंत जैसे जैसे पास आ रहा है, वैसे वैसे दिखने लगा है कि इस दौड़ में एक ही खिलाड़ी रहा है औरों से कोसों आगे और उस खिलाड़ी का नाम है नरेंद्र मोदी। एक बार फिर मोदी सरकार अगर बनती है इस हफ्ते, तो श्रेय उनको निजी तौर पर मिलेगा।

कांग्रेस अध्यक्ष और महागठबंधन के पक्ष में अगर कोई ठोस मुद्दा था, तो वही पुरानी सेक्युलरिजम की कवच। लेकिन इस पर भी शक करने लगे थे लोग, क्योंकि राहुल और प्रियंका गांधी ने अपने आप को अच्छा हिंदू साबित करने के लिए जरूरत से ज्यादा प्रयास किए। मंदिरों के चक्कर काटने लगे और ऐसा करके उन्होंने मुसलमानों के दिमाग में उनकी तथाकथित सेक्युलरिजम को लेकर शक पैदा किया। गोरक्षकों की हिंसा से मुसलिम समाज मोदी से इतना दुखी है कि इस बार खुल कर उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में बताते हैं कि उनकी रणनीति बन चुकी है उन प्रत्याशियों को वोट देने की, जो भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों को हरा सकते हैं। इसका लाभ उत्तर प्रदेश में मिलेगा मायावती और अखिलेश यादव के गठबंधन को, कांग्रेस को नहीं।

समस्या यह है कि बिना कांग्रेस के केंद्र में सरकार बन नहीं सकती, क्योंकि किसी भी राज्य क्षत्रप के पास लोकसभा में इतनी सीटें नहीं आने वाली हैं, जो अपने आप को सबसे बड़ा दल साबित कर सके। यह दावा सिर्फ कांग्रेस कर सकती है, सो सोनिया गांधी ने तेईस मई को महागठबंधन के नेताओं के साथ अपने घर में मुलाकात रखी है। परिणाम आने तक प्रतीक्षा करना इसलिए जरूरी है, क्योंकि अभी तक ऐसा नहीं दिख रहा है कि कांग्रेस पार्टी सौ के आंकड़े तक पहुंच पाएगी, ताकि मोदी को चुनौती दे पाए।

मोदी को हराना आसान नहीं था कभी भी। लेकिन हराया जा सकता था, अगर कांग्रेस अध्यक्ष ने पिछले पांच वर्षों में पार्टी की जड़ों को मजबूत करने का दिल से प्रयास किया होता। ऐसा करने के बदले उन्होंने अपने परिवार को मजबूत करने का प्रयास किया, सो जब युद्ध कठिन लगने लगा तो अपनी बहन को उतार दिया युद्धभूमि में। ऐसा कर-के उन्होंने एक बार फिर साबित किया कि उनको अपने परिवार के तथाकथित करिश्मे पर भरोसा ज्यादा है, कांग्रेस पार्टी की शक्ति और सिद्धांतों पर कम। समस्या उनकी यह है कि करिश्मा और सेक्युलरिज्म ऐसे कारतूस हैं, जो इतनी बार इस्तेमाल किए गए हैं कि उनमें ऊर्जा ही नहीं रही है।

सो, सत्रहवीं लोकसभा की कहानी का अंत जैसे जैसे पास आ रहा है, वैसे वैसे दिखने लगा है कि इस दौड़ में एक ही खिलाड़ी रहा है औरों से कोसों आगे और उस खिलाड़ी का नाम है नरेंद्र मोदी। एक बार फिर मोदी सरकार अगर बनती है इस हफ्ते, तो श्रेय उनको निजी तौर पर मिलेगा। कई गलतियां रही हैं उनके दौर में, कई वादे हैं, जो अभी तक पूरे नहीं कर पाए हैं, लेकिन मोदी की लोकप्रियता कम नहीं हुई है और न ही मतदाताओं का उन पर विश्वास।

मेरा मानना है कि उनकी छवि और भी अच्छी होती आज अगर उन्होंने साध्वी प्रज्ञा और योगी आदित्यनाथ जैसे कट्टरपंथियों को अपना हमसफर न बनाया होता। सबका साथ, सबका विकास वाले वादे पर अगर खरा उतरे होते, तो उनको मुसलमानों का भी वोट मिलता इस बार। पर ऐसा कहने के बाद यह भी कहना होगा कि अपने प्रतिद्वंद्वियों के सामने जब खड़े होते हैं मोदी, तो उनका कद उनसे ऊंचा दिखता है।

जय काली कलकत्ते वाली

जब कुछ बड़े लोग टीवी में 'तू तू मैं मैं' करते हैं, तो दर्शक टूट के देखते हैं। यह देख कर अच्छा लगता है कि बड़े लोग भी अंततः उसी गली छाप भाषा में हिसाब-किताब करते हैं, जिसमें आम लोग करते हैं।

जैसे कि एक दिन एक ने ताल ठोक दी कि मैं उनकी इमेज को ध्वस्त करके रहूंगा। तुरंत जवाब आया कि ये इमेज 'खान मार्केट' में नहीं बनी, लंबी तपस्या से बनी है। लेकिन, तपस्या पर भी चुटकी ली गई कि अगर कुछ घंटे भी तपस्या की होती, तो इतनी घृणा न होती।

घृणा के बोल बड़े उत्तेजक होते हैं। किसने कितनी घृणा घोली, किसने कितना गुस्सा दिखाया, किसने कितनी हिकारत से दूसरे को कुछ कहा।... हमारा नागरिक शब्दकोश नित्य नए-नए घृणावाची शब्दों से संपन्न होता जाता है। एंकर चर्चा के बहाने घृणा का मुरब्बा बनाने लगते हैं।

घृणा का मुरब्बा बनाने के शौकीन एक एंकर ने 'इमेज को ध्वस्त करने' और जवाब में 'खान मार्केट गैंग' की कुटाई करने का अखाड़ा खोल दिया।

फोटोफ्रेमों में लाइव लटकायमान अंग्रेजी विचारकों के बीच 'लटयन्स दिल्ली' और 'खान मार्केट गैंग' को ध्वस्त करने का आह्वान हो चुका था। एक ओर लटयन्स और खान मार्केट के हमदर्द कह रहे थे कि वह तो एक 'खाने-पीने की एक जगह' है। सभी जाते हैं। राहुल जाते हैं, तो भाजपा वाले भी तो जाते हैं। तब उससे परेशानी क्यों? लटयन्स और खान मार्केट गैंग का ध्वंस चाहने वालों की राय थी कि चूंकि यह एलीट का 'सहेट स्थल' है, इसलिए हिकारत के योग्य है!

इसी बीच चीख-चीख कर चर्चा कराती हुई एक एंकर जोर से चीख पड़ी और एक 'ब्रेकिंग सीन' दिखाने लगी : देखिए देखिए! यहां सबके सब हथियारबंद हैं। किसी के पास पिस्तौल है, तो किसी के पास स्टेनगन है। सबने अपने चेहरे ढंके हुए हैं। देखिए देखिए, हमी सबसे पहले इनको रिपोर्ट कर रहे हैं। यह बंगाल का पुरुलिया इलाका है।... एक विचारक बोला, अगर ये पुरुलिया में हैं, तो पुलिस इनको गिरफ्तार क्यों नहीं कर रही?

लेकिन अगले ही पल एंकर को बताना पड़ा कि ये चित्र पुरुलिया के नहीं, झारखंड के हैं। यह लोकल पत्रकार का कारनामा है। पुलिस ने बताया है। अरे भई! ऐसी 'फेक न्यूज' को 'फेंकने' से पहले इसे चेक कर लिया होता, तो क्या बेहतर न होता।

मतदान के छठे चरण के निपटते ही एक एंकर जी अपने पीआर में लग गए : देखिए, वे वोट डाल कर आए, तो कितने कान्फीडेंट दिखे। ये आए तो लापरवाह दिखे। साफ है, कौन जीत रहा है!

जब आप सिर्फ देहभाषा देख जीत-हार के बारे में बता सकते हैं, तब उन्नीस मई की शाम एक्जिट पोल दिखाने के पीछे क्यों पड़े हैं?

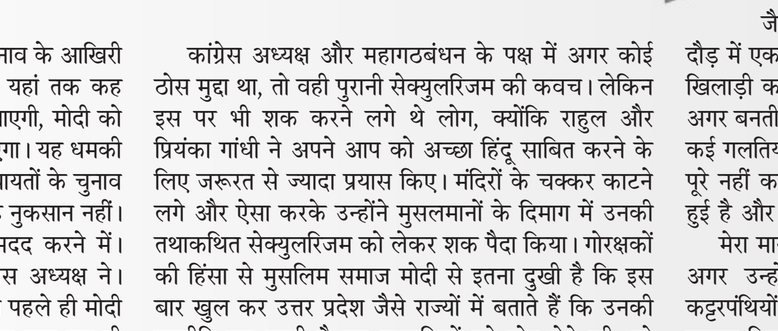

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

> यों तो अपने नेताओं के मुखारबिंद से नित्य अनमोल बोल झरते हैं, लेकिन चुनाव के इन आखिरी चरणों में जैसे मोती झरे वैसे कभी न झरे! उनको सुन-सुन कर हम सब कुछ अधिक सभ्य ही हुए!

यों तो अपने नेताओं के मुखारबिंद से नित्य अनमोल बोल झरते हैं, लेकिन चुनाव के इन आखिरी चरणों में जैसे मोती झरे वैसे कभी न झरे! उनको सुन-सुन कर हम सब कुछ अधिक सभ्य ही हुए!

एक दिन कांग्रेस के खरगे जी को जोश आ गया और बोल पड़े कि अगर कांग्रेस को चालीस से अधिक सीटें मिलीं तो क्या वे फांसी लगाएंगे?

फिर एक दिन कमल हासन ने बताया कि नाथूराम गोडसे पहला हिंदू आतंकवादी था। इसके तुरंत बाद भाजपा के चार वक्ताओं ने लाइन लगा कर इस बयान के लिए कमल हासन को कंडेम किया।

कांग्रेस के एक नेता ने मानो गहन तुलनात्मक अध्ययन करके बताया, जैसे अरब दुनिया में आइएसआई, वैसे ही भारत में आरएसएस है। गनीमत कि किसी ने इसे न छुआ, वरना एक दिन और तू-तू मैं-मैं में जाता।

कमल हासन के नाथूराम गोडसे को आतंकवादी कहने के जवाब में हिंदू महासभा के एक नेता ने टीवी में आकर धमकी भरे स्वर में कहा : कमल हासन का अगर जीने से जी भर गया हो, तो हमें बता दें, हम उनको भी गांधी के पास पहुंचा देंगे। भगवान गोडसे का अपमान हम बर्दाश्त नहीं कर सकते।

ऐसे धमकी भरे वचनों का नोटिस किसने लिया? हमारी जानकारी में किसी ने नहीं !शायद यही अच्छा है!

कमल हासन के कथन के मानो जवाब में साध्वी प्रज्ञा सिंह ने कह दिया कि नाथूराम गोडसे देशभक्त थे, हैं और रहेंगे! इसके बाद सब चैनलों में भाजपा की पिटाई शुरू। संभालने के लिए भाजपा के प्रवक्ता ने सफाई दी कि ऐसे वचनों से भाजपा सहमत नहीं। बाद में साध्वी ने भी माफी मांग ली!

एक अंग्रेजी चैनल ने लाइन लगाई कि कांग्रेस ने भागवत की तुलना बगदादी से की !मगर यह तुलना किसी एंकर का ध्यान नहीं खींच सकी।

फिर आए कांग्रेस के परम हितैषी जी के 'नीच' वचन! एक अखबार में 'नीच' की व्याख्या करते हुए वे कह दिए कि 'नीच' के मामले में क्या उनके 'नीच' वचन भविष्यवाची नहीं थे?

जिस कांग्रेस में ऐसे आत्ममुग्ध हितैषी हों, उसे दुश्मनों की क्या जरूरत!

अगला बड़ा सीन कोलकाता ने दिया। भाजपा अध्यक्ष का लंबा रोड शो। वह जैसे ही विद्यासागर कॉलेज पहुंचा कि पथराव और आगजनी शुरू हो गई। इस हंगामे में ईश्वरचंद्र विद्यासागर की मूर्ति तोड़ दी गई। शाह ने कहा, टीएमसी के गुंडों ने तोड़ी। टीमएसी ने चौवालीस वीडियोज में से कुछ को दिखा कर कहा कि भाजपा के गुंडों ने तोड़ी! पुलिस ने कुछ 'गुडों' को गिरफ्तार कर लिया। 'किसने तोड़ी' की बहस जारी ही थी कि चुनाव आयोग अपने असली रूप में आया और दो बड़े अफसर तुरंत हटा दिए, ताकि कानून-व्यवस्था नियंत्रण में रहे।

फिर भी भाजपा और टीएमसी की हुंकार-फुंकार जारी है। एक ओर से नारा आता है 'जय श्रीराम' तो दूसरी ओर से जवाबी नारा आता है 'जय काली कलकत्ते वाली!'

नई दिल्ली